Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 2 | November 2025 - April 2026 | pp. 86-90

जयपुर शहर परकोटा : शास्त्र आधारित नगर नियोजन

डॉ. अदिति शर्मा

सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

रूबी मीना

शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर नगर की स्थापना, उसकी स्थापत्य योजना तथा ऐतिहासिक महत्व का अध्ययन किया गया है। जयपुर की स्थापना कछवाहा वंश के प्रतापी शासक सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा 18 नवंबर 1727 को की गई थी। आमेर में बढ़ती जनसंख्या तथा जल संकट के कारण नई राजधानी की आवश्यकता अनुभव की गई, जिसके परिणामस्वरूप जयपुर नगर का निर्माण प्रारंभ हुआ। शहर के प्रमुख मार्गों, महलों तथा प्रशासनिक भवनों का निर्माण लगभग चार वर्षों में पूर्ण किया गया और इसके पश्चात जयपुर राजपूत शासकों की राजधानी बना। इस शोध पत्र में जयपुर के प्रमुख वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। विद्याधर न केवल नगर के मुख्य वास्तुकार थे, बल्कि 1729 में जयपुर के दीवान भी नियुक्त किए गए। दरबारी कवि ईश्वर सिंह द्वारा रचित ईश्वर विलास महाकाव्य में उनके स्थापत्य योगदान का विस्तृत उल्लेख मिलता है। जयपुर नगर की योजना वास्तु शास्त्र एवं शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर तैयार की गई थी। सवाई जयसिंह द्वितीय ने नगर नियोजन से पूर्व वास्तुकला संबंधी अनेक ग्रंथों का अध्ययन एवं परामर्श किया। यह शोध पत्र जयपुर को भारतीय नगर नियोजन, वैज्ञानिक स्थापत्य कला तथा सांस्कृतिक विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण सिद्ध करता है।

संकेताक्षर—*मानसार शास्त्र, ईश्वरविलास महाकाव्य, वास्तु शास्त्र, शिल्प शास्त्र, खगोलशास्त्र, वास्तुकला*

प्रस्तावना

जयपुर की स्थापना कछवाहा वंश के राजपूत राजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 18 नवंबर 1727 को की थी। सवाई जयसिंह ने 1699 से 1743 तक शासन किया और अपने दीर्घ शासनकाल में उन्होंने कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्य करवाए। आमेर उनकी पुरानी राजधानी थी, परंतु जनसंख्या में तेजी से वृद्धि और पानी की बढ़ती हुई कमी के कारण जय सिंह द्वितीय को एक नई, अधिक विशाल और सुव्यवस्थित राजधानी की आवश्यकता महसूस हुई। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उन्होंने एक नए नगर की स्थापना का निर्णय लिया, जिसे उनके नाम पर 'जयपुर' कहा गया।

जयपुर की योजना बनाते समय जय सिंह ने वास्तुकला और वास्तुकारों पर कई पुस्तकों से परामर्श किया। उन्होंने विश्व के विभिन्न सुनियोजित शहरों का अध्ययन करवाया और खगोलशास्त्र के विश्वव्यापी अध्ययन के बाद ही अंतिम योजना तैयार की। इस कार्य में उनके मुख्य सहायक थे विद्याधर भट्टाचार्य, जो एक कुशल वास्तुकार, इंजीनियर और प्रशासक थे। शहर का निर्माण 1726 में प्रारंभ हुआ और प्रमुख सड़कों, कार्यालयों और महलों को पूरा करने में लगभग चार साल का समय लगा। जयपुर की स्थापना के साथ ही यह आमेर के बाद राजपूत राजाओं की प्रमुख राजधानी बन गया।

विद्याधर भट्टाचार्य : जयपुर के प्रमुख वास्तुकार

जयपुर के प्रमुख वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे। वे न केवल एक प्रतिभाशाली वास्तुविद् थे, बल्कि एक दक्ष प्रशासक भी थे। उनकी योग्यता और कार्यकुशलता को देखते हुए वे 1729 में जयपुर के दीवान (मंत्री) के पद पर नियुक्त हुए। अभिलेखों

से पता चलता है कि सवाई जयसिंह के मंत्रिमंडल में विद्याधर भट्टाचार्य राजकीय और निजी दोनों प्रकार की इमारतों के लिए मुख्य वास्तुकार और इंजीनियर की भूमिका में थे। शहर की स्थापना के बारह साल बाद गिरधारी ने अपने 'भोजनसार' में उल्लेख किया है कि जयसिंह ने विद्याधर को यहां एक शहर बसाने का निर्देश दिया था।

ईश्वर विलास महाकाव्य, जो दरबारी कवि ईश्वर सिंह द्वारा लिखा गया है, विद्याधर के योगदान से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इस कृति के दसवें सर्ग में कई ऐसे अंश हैं जो हमें शहर की योजना बनाने में विद्याधर की भूमिका की याद दिलाते हैं। गिरधारी के 'भोजनसार' ने भी विद्याधर को शहर का वास्तुकार बताया है। विद्याधर ने अपनी गुप्त इच्छा के अनुसार इस शहर के भीतर जय निवास बनाने की इच्छा जताई थी और कई चौराहों पर दुकानें बनाने का निर्देश दिया था, जिनके घरों के पिछवाड़े आपस में मिले होने चाहिए। जाहिर है कि निजी इमारतों के निर्माण पर राजा का सख्त नियंत्रण था, और यही कारण है कि आज भी जयपुर की वास्तुकला में एकरूपता और सुसंगति देखी जाती है।

वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र : नगर नियोजन का आधार

जयपुर का नगर नियोजन प्राचीन भारतीय शास्त्रों, विशेषकर वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित था। इनमें सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ मानसार है, जिसे मनसा या मनसार शिल्प शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। यह भारतीय वास्तुकला और डिजाइन पर एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है जो 70 अध्यायों और लगभग 10,000 श्लोकों में संगठित है। यह शिल्प शास्त्र पर कई हिंदू ग्रंथों में से एक है, जो पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व में अस्तित्व में था। मानसार प्राचीन भारतीय वास्तुकला पर उन कुछ ग्रंथों में से एक है जिनकी पूरी पांडुलिपियाँ आधुनिक युग में उपलब्ध हैं। यह एक ऐसा ग्रंथ है जो हिंदू मंदिरों, मूर्तियों, घरों, उद्यानों, पानी की टंकियों, कस्बों और अन्य संरचनाओं के निर्माण पर विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

मानसार अपने दूसरे अध्याय के आरंभ में मापन प्रणाली का विवरण देता है। नगर नियोजन के लिए माप की इकाई 'दण्डा' थी, जहाँ एक दण्डा = 4 हस्त = लगभग 6 फीट होता है। आज यह माप फीट या मीटर में की जाती है। मानसार के अनुसार किसी नगर का आकार वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए, जिसे 'मानसर' कहते हैं। इस प्रकार की योजना में शहर की दीवार और इमारतों के बीच 'पैशाचा' (खुली जगह) छोड़ी जाती है और इस जगह को एक बुलेवार्ड द्वारा सीमांकित किया जाता है जो चारों ओर से जाती है। इस बुलेवार्ड पर कतारों में पेड़ लगाए जाते हैं जो नगर को एक सुंदर और हरियाली भरा स्वरूप प्रदान करते हैं।

मानसार में यह भी कहा गया है कि नगर को उपयुक्त राजमार्गों के नेटवर्क द्वारा चार, नौ या सोलह वार्डों में विभाजित किया जाना चाहिए। इन राजमार्गों को अलग-अलग मापों—जैसे छह, सात, आठ, नौ या ग्यारह दण्डों—के अनुसार चौड़ा किया जाता है। सड़कें शतरंज की बिसात के रूप या पैटर्न के अनुसार वार्डों में बनाई जाती हैं। वार्डों को समान संख्या में भूखंडों में विभाजित नहीं किया जाता; बल्कि इन्हें अलग-अलग भूखंडों में बांटा जाता है—एक को नौ, दूसरे को सोलह और तीसरे को पच्चीस भूखंड दिए जाते हैं। ये भूखंड लोगों की स्थिति और पद के अनुसार आवंटित किए जाते थे।

नौ ब्लॉक और सात चौकड़ियाँ

जयपुर शहर को नौ ब्लॉकों में विभाजित किया गया था, जिनमें से दो में राज्य भवन और महल शामिल थे, जबकि शेष सात जनता को आवंटित किए गए थे। इन सात विभागों को क्रमशः पुरानी बस्ती, तोपखाना देश, चौकड़ी मोदीखाना, चौकड़ी विशेश्वर जी, घाट दरवाजा, चौकड़ी रामचंद्र और तोपखाना हजूरी के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि मोदीखाना और विशेश्वरजी मूल रूप से एक ही ब्लॉक के थे, जिसे बाद में चौड़ा रास्ता बनाकर दो ब्लॉकों में विभाजित कर दिया गया।

अन्य शेष ब्लॉक आकार में समान नहीं हैं और सड़कों के ग्रिड में भी कुछ अनियमितताएँ हैं। तोपखाना हजूरी की आंतरिक सड़कें अनियमित हैं। पुरानी बस्ती के मामले में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र खंडित है, और इस चौकड़ी में विभाजन स्पष्ट नहीं हैं। तोपखाना देश, पुरानी बस्ती और फिर मोदीखाना-विशेश्वर जी प्रारंभिक चरण में नियोजित इकाइयाँ हैं। सड़क और ब्लॉक के आयाम बताते हैं कि ये तीन ब्लॉक और शाही महल शहर के मूल रूप से नियोजित क्षेत्र का गठन करते थे।

परकोटे की दीवार और प्रवेश द्वार

जयपुर शहर के चारों ओर एक विशाल प्राचीर का निर्माण किया गया था, जिसे 'परकोटे की दीवार' कहते हैं। इसे सात गढ़ वाले फाटकों से खोला गया था। शहर इस दीवार (सरहद) से घिरा हुआ था, जिसके दक्षिण में चार द्वार थे, जबकि पूर्व, पश्चिम और उत्तर में एक-एक द्वार था। दीवार वाले शहर की योजना में सात द्वार दिखाए गए हैं—पूर्व में सूरजपोल, पश्चिम में चांदपोल, उत्तर-दक्षिण अक्ष पर शिवपोल (सांगानेरी गेट), दक्षिणी छोर पर किशनपोल (अजमेरी गेट), और दक्षिणी शहर की दीवार पर रामपोल या घाट द्वार।

कपड़द्वार दस्तावेज में द्वार के नाम चांदपोल, सूरजपोल, किशनपोल, शिवपोल (सांगानेर गेट), रामपोल (घाट दरवाजा), गंगापोल और त्रिपोलिया का उल्लेख है। जयपुर का एक और प्रकाशित अदिनांकित मानचित्र भी है, जिसका अध्ययन सुसान गोले ने किया था, जो आठ द्वारों वाले जयपुर शहर के उपखंड और स्थान को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। ये आठ द्वार हैं—सूरजपोल, चांदपोल, शिवपोल, ध्रुवपोल, रामपोल, गंगापोल, किशनपोल और ब्रह्मपोल। हाल के दिनों में जयपुर चारदीवारी शहर में ब्रह्मपोल को छोड़कर सभी द्वार देखे जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद सम्राट गेट ही ब्रह्मपोल था क्योंकि ब्रह्मपुरी में प्रवेश सम्राट गेट से होता है। राजवल्लभ के अनुसार नगर की दीवार में चार सिंहद्वार तथा प्रवेश के आठ मजबूत द्वार होने चाहिए।

सियाहा हजूर प्रविष्टियों से सवाई जयसिंह की नगर यात्रा का पता चलता है। जब जयसिंह ने नगर भ्रमण प्रारंभ किया तो वे चांदपोल, सूरजपोल, शिवपोल तथा रामपोल द्वारों से होकर गुजरे। यह यात्रा 1733 में की गई थी। यह साक्ष्य हमें उक्त तिथि में द्वारों की संख्या तथा प्रकार का अनुमान लगाने में सहायता करता है और इस प्रकार द्वारों के निर्माण काल को निर्धारित करने में उपयोगी है।

बाजारों की योजना और वास्तुकला

जयपुर के बाजार उसकी नगर योजना का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा थे। मानसरा शास्त्र में कहा गया है कि दुकानें मुख्य सड़कों पर स्थित होनी चाहिए, कि वे घरों की निचली मंजिल से मिलकर बनी होनी चाहिए, जो एक समान डिजाइन की होनी चाहिए, और सड़कों के किनारे चौड़े फुटपाथ होने चाहिए और उन्हें महाराजा के महल से जोड़ा जाना चाहिए। जयपुर के बाजार इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

शहर के लिए चार बाजारों की मूल योजना बनाई गई थी, जिन्हें बाद में जौहरी बाजार, सिरेह ड्योढ़ी बाजार, किशनपोल बाजार और गणगौरी बाजार के नाम से जाना गया। मानचित्र पर दी गई प्रगति रिपोर्ट के अनुसार किशनपोल बाजार के पश्चिमी हिस्से की 144 दुकानों को छोड़कर इन बाजारों के प्रत्येक तरफ जयपुर राज्य द्वारा 162 दुकानें बनाई गईं। किशनपोल बाजार के एक तरफ 144 दुकानों का क्षेत्रफल 16 बीघा था और 162 दुकानों का क्षेत्रफल 18 बीघा था। चांदपोल बाजार पर विचार किया गया था, लेकिन उस समय इसका निर्माण नहीं किया गया। त्रिपोलिया बाजार के बारे में मूल योजना में बिल्कुल भी नहीं सोचा गया था। मूल योजना में शहर के पूर्वी हिस्से में रामगंज और अन्य बाजारों के लिए कोई प्रावधान नहीं था।

बाजारों की वास्तुकला में कई विशेषताएँ हैं—छज्जों (ईव्स) का उपयोग जिसके परिणामस्वरूप मजबूत क्षैतिज रेखाएँ बनती हैं, खांचों पर ऊर्ध्वाधर मेहराबों को लगाया गया है और सीधे सूर्य की रोशनी तथा सड़क पर परावर्तित सूर्य की चमक को रोकने के लिए नाजुक जालीदार स्क्रीन से भरे मेहराबों की एक मॉड्यूलर प्रणाली बनाई गई है। दुकानों को वास्तुकला के साथ-साथ शिल्प-शास्त्रों के अनुरूप भी बनाया गया है, क्योंकि डिजाइन में वे चित्तौड़ के मोती बाजार की तरह हैं, जो पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य या उससे पहले बनाया गया था।

प्रत्येक दुकान में मूल रूप से एक एकल कक्ष होता था और दुकानों की प्रत्येक पंक्ति में दुकानों के सामने एक बरामदा होता था। पैदल यात्रियों को छाया प्रदान करने के लिए बरामदा आवश्यक था। बरामदे की छतें, जिन तक सड़क से सीढ़ियों के जरिए पहुंचा जा सकता था, छतों के रूप में काम करती थीं, जहाँ से जनता शाही जुलूस या अन्य शानदार कार्यक्रम देख सकती थी। दो स्तरों पर सार्वजनिक स्थान का यह सरल प्रावधान राजपूत शहर की वास्तुकला में अद्वितीय है। वी. प्रभाकर बेगड़े अपनी पुस्तक 'फोर्ट्स एंड पैलेसेज ऑफ इंडिया' में लिखते हैं कि हाल के दिनों में जयपुर के दुकानदारों को अपनी दुकानों के ठीक सामने बरामदे के हिस्से को घेरने की अनुमति दे दी गई थी, लेकिन राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने फरवरी 2000 से अगस्त 2001 के बीच ऑपरेशन पिंक के द्वारा सभी बाजारों के बरामदे खाली करवा लिए।

जयपुर के चौक और बाजारों की योजना से संबंधित मानचित्र और नोट संख्या 113 में रामचौक, चांदनी चौक, माणिक चौक और पहाड़गंज चौक जैसे चौकों के नाम बताए गए हैं। सवाई जयसिंह ने ये नाम शाहजहांनाबाद (दिल्ली) से लिए हैं, जो यह बताता है कि उन्होंने मुगल नगर नियोजन से भी प्रेरणा ली थी।

सियाहा हुजूर के कागज से पता चलता है कि आमेर राजा चैत्र वदी 10, संवत् 1790 (29 मार्च 1733) को होली मनाने के लिए माणिक चौक, चांदनी चौक, राम चौक, पहाड़गंज चौक गए थे। अर्हसत्ता इमरती में राम चौक और चांदनी चौक क्षेत्र की मरम्मत से संबंधित जानकारी भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ये चौक न केवल व्यापारिक केंद्र थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र भी थे जहाँ नागरिक एकत्रित होते थे और सामूहिक उत्सव मनाते थे।

मापन प्रणाली और महल की वास्तुकला

जयपुर में प्रयुक्त माप के संबंध में विभिन्न स्रोतों से जानकारी उपलब्ध है। एक पारंपरिक राजमिस्त्री कल्याण ने उल्लेख किया है कि माप की इकाइयों के रूप में हस्ता और अंगुला का उपयोग किया जाता था। कपड़द्वार मानचित्र से पता चलता है कि जयपुर में माप की इकाइयों के रूप में गज, सवाया (एक चौथाई अतिरिक्त) और बीघा का उपयोग किया जाता था। 1924 में क्षेत्रीय आयुक्त ई.आर.के. बिएनकिंसशॉप के अनुसार, बीघा का माप स्थान के आधार पर 100 फीट से 185 फीट तक भिन्न होता है। गिरधारी के भोजनसार में उल्लेख है कि 'बेग बसायक वर्ष में बारहै कोस ही फेर'—जिसका अर्थ है कि सवाई जयपुर एक वर्ष में आबाद होना चाहिए और इसका विस्तार 12 कोस होना चाहिए।

दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास (सर्बतोभद्र) मुगल शैली में बनाए गए थे और वास्तुकला के विवरण में मुगल प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। दीवान-ए-खास योजना में चौकोर बना हुआ है और यह पश्चिम में एक संलग्न प्रांगण में स्थित है। यह एक आकर्षक संरचना है जो एक ऊंचे मंच पर बनी है और सभी तरफ से खुली हुई है। दीवान-ए-आम या सार्वजनिक दर्शकों का हॉल भी सभी तरफ से खुला है और अब इसका उपयोग संग्रहालय के उद्देश्य से किया जाता है। बिशप हेबर ने इसे 'संगमरमर के खंभों वाला एक शानदार खुला मंडप' बताया है।

सड़क नेटवर्क और ग्रिड पैटर्न

जयपुर की सड़कें ग्रिड पैटर्न में मजबूती से बनी हुई हैं, जो भारत में योजनाबद्ध शहर का एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यह ग्रिड प्रणाली मानसार शास्त्र के उन निर्देशों के अनुरूप है जिनमें कहा गया है कि नगर की सड़कें शतरंज की बिसात के पैटर्न में बनाई जाएं। इस व्यवस्था से यातायात और नागरिक जीवन सुविधाजनक बनता है और नगर में व्यवस्था बनाए रखना आसान होता है।

लेकिन उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में कुछ विचलन देखने को मिलते हैं। उत्तर-पश्चिम भाग में नाहरगढ़ की पहाड़ी संभवतः अधूरे ग्रिड का कारण थी, जबकि दक्षिण-पूर्व में एक पूरी चौकड़ी अलग हो गई है। शहर के मध्य भाग में महल और जंतर मंतर हैं। जंतर मंतर, जो सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित एक प्रसिद्ध वेधशाला है, इस बात का प्रमाण है कि नगर नियोजन में खगोलशास्त्र को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था।

सिटी पैलेस को छोड़कर बाकी सात ब्लॉकों में रिहायशी इलाके हैं, जिनमें व्यावसायिक स्थान भी शामिल हैं। व्यावसायिक और आवासीय सड़कों में स्पष्ट अंतर था। व्यावसायिक सड़कों में भूतल पर दुकानें हैं, जो ब्लॉक की लंबाई तक फैले एक गलियारे द्वारा छायांकित हैं, जो पहली मंजिल पर स्थित रहने वाले क्वार्टर के सामने एक छत की नींव का काम भी करता है। आवासीय सड़कों में दुकान, व्यापार और बैठने की जगह शामिल है, जिसका उपयोग मूल रूप से पारिवारिक व्यवसाय के लिए किया जाता था। यह व्यवस्था वर्तमान में भी प्रचलित है। यह रास्ता या व्यावसायिक क्षेत्र जयपुर के आवासीय क्षेत्रों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक किनारा प्रदान करता है।

निष्कर्ष

जयपुर शहर का निर्माण उसकी स्थापना के समय से ही वास्तु शास्त्र के प्राचीन ग्रंथों, विश्व के सुनियोजित शहरों और खगोलशास्त्र के विश्वव्यापी अध्ययन के बाद किया गया था, जो जयपुर शहर को अतिविशिष्ट बनाता है। सवाई जयसिंह और उनके मुख्य वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य ने प्राचीन भारतीय शास्त्रों की परंपरा को उस काल की व्यावहारिक आवश्यकताओं के साथ संयुक्त करके एक ऐसे नगर की रचना की जो आज भी अपनी वास्तुकला और नगर-नियोजन के लिए अनूठा है। मानसार, अर्थशास्त्र, और वास्तुराजबल्लभ जैसे

प्राचीन शास्त्रों के सिद्धांतों को जयपुर में स्थानीय परिस्थितियों, भौगोलिक बाधाओं और जनसंख्या की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया गया। यही कारण है कि जयपुर भारतीय शहरी नियोजन के इतिहास में एक अप्रतिम अध्याय के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, ईश्वरी, ईश्वरविलास महाकाव्य, पृ.सं. 191-93
2. गहलोत, राम प्रकाश, जयपुर दर्शन, नगर विकास न्याय परिसर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर, पृ.सं. 4
3. मूल दस्तावेज जयपुर राज्य का इतिहास
4. अग्रवाल, बी.डी., जोधपुर, राजस्थान जिला गजेटियर्स, जयपुर, 1979
5. अग्रवाल, रत्न चंद्रा, मेवाड़ के कुछ प्रसिद्ध मूर्तिकार और वास्तुकार, भारतीय ऐतिहासिक त्रैमासिक, खंड 33, संख्या 4 (दिसंबर 1957), पृ.सं. 321-34.
6. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट, खंड I & XXIII संस्करण। अलेक्जेंडर कनिंघम, शिमला, कलकत्ता, 1871-87
7. जिमिनो, रोजा मारिया (सं.), लाइफ एट कोर्ट इन राजस्थान, ए. रहमान के रूप में उद्धृत, 1985, पृ.सं. 18
8. रे, अमिता, प्राचीन भारत में गांव, कस्बे और धर्मनिरपेक्ष इमारतें, फिरमा के.एल. मुखोपाध्याय बंछाराम अकुर लेन कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, 1964
9. दत्त, बी.बी., प्राचीन भारत में नगर नियोजन, थैकर स्पिंक एंड कंपनी, कलकत्ता और शिमला 1925 पुनर्मुद्रण 2009, पृ.सं. 235-37
10. क्लॉस के. क्लोस्टरमायर, हिंदू धर्म का संक्षिप्त विश्वकोश, वनवर्ल्ड प्रकाशन, ऑक्सफोर्ड, 2014, पृ.सं. 112
11. जैन, शिखा, प्रिंसली टेरेन-आमेर, जयपुर और शेखावाटी, शुभी प्रकाशन गुड़गांव, 2006, पृ.सं. 134
12. कपड़-द्वार, मानचित्र एवं नोट्स संख्या-45, 5
13. भटनागर, वी.एस., सवाई जय सिंह का जीवन और समय, इम्पेक्स इंडिया, नई दिल्ली, 1974. पृ.सं. 334
14. हेबर, बिश्क, एक यात्रा का वर्णन, इरूआ के ऊपरी प्रांतों के माध्यम से, पहली बार प्रकाशित 1827, पुनर्मुद्रण, 1993, दिल्ली खंड II, पृ.सं. 406
15. फुनो, शुजी, यामामोटो, नाओहिको और पंत, मोहन, जयपुर शहर, राजस्थान, भारत का अंतरिक्ष निर्माण, सर्वेक्षण द्वारा बनाए गए शहर के मानचित्रों (1925-28) पर एक विश्लेषण, जर्नल ऑफ एशियन आर्किटेक्चर एंड बिल्डिंग इंजीनियरिंग, मार्च, 2002
16. गोले, सुसान, भारतीय मानचित्र और योजनाएँ, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 1989, पृ.सं. 53
17. सिया हजूर पेपर्स, एस. 1790 जे. एस. ए. भटनागर, वी.एस., सवाई जय सिंह का जीवन और समय, इम्पेक्स इंडिया, नई दिल्ली, 1974, पृ.सं. 333
18. हसन एस. नूरुल, एक मध्यकालीन भारतीय शहर की आकृति विज्ञान 18वीं और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में शाहजहाँनाबाद का एक केस अध्ययन 1982 भारतीय इतिहास कांग्रेस नई दिल्ली
19. पोतदार का रोजनामचा, दिनांक वी.एस. 1783/1726, आर.एस.ए. बीकानेर। गुलाबी शहर की योजना बनाना, नक्शे और दस्तावेज, पृ.सं. 37